MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue, March 2019

International Multilingual Refereed Research Journal

Vidyawarta®

Indian Council And Social Science Research

(Western Regional Center,Mumbai)

And

Jeevandeep Shaikshanik Sanstha

Arts, Commerce & Science College, Khardi

Tq.Shahapur, Dist.Thane.

(Affiliated to Mumbai University)

Organized

Two Day's Interdisciplinary National Conference on

Impact of Globalisation on Indian Tribal Community

On Dated : **01 & 02 March, 2019**

Organized By

Jeevandeep Shaikshanik Sanstha

Arts, Commerce & Science College, Khardi,

Shahapur,Dist-Thane- 421601

Prof. D.M.Bhutale
Convener

Prof.K.R. Kalkate
I/C. Principal

Scanned with CamScanner

25) जागतिकीकरणात आदिवासींचे स्थान
प्रा. संदिप भागु चपटे, शिवळे मुरबाड ||100

26) जागतिकीकरणाचा ठाणे जिल्हयातील आदिवासी जमातींवरील परिणाम
प्रा. लालचंद्र आर. संते, जि. ठाणे ||103

27) जागतिकीकरणाची संकल्पना
डॉ. सिध्देश्वर सटाले, गेवराई ||106

28) जागतिकीकरणाचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम
प्रा. आर. जी. शेवलीकर, धर्माबाद ||108

29) जागतिकीकरण आणि भारतातील आदिवासी समुदयाचे आर्थिक जीवन
डॉ. विकास विठठ्ल शेवाळे, पुणे ||111

30) पालघर जिल्हयातील पर्यटन स्थळांचा जागतिकीकरणाच्या दृष्टीने केलेला अभ्यास
प्रा. सोमनाथ अंकुश नवले, जि. ठाणे ||117

31) आदिवासी समुदायावर जागतिकीकरणाचे झालेले परिणाम–एक समाजशास्त्रीय ...
डॉ. दत्ता एम. तंगलवाड, जि.बीड ||121

32) जागतिकरणाचा भारतीय आदिवासी संस्कृतीवर झालेला परिणाम:एक आभ्यास
संध्या रूस्तुम येवले, पुणे ||125

33) जागतिकीकरण आणि आदिवासी समाज
प्रा.डॉ. माधव केरबा वाघमारे, जि. जळगाव ||127

34) संजीव के उपन्यासों में चित्रित औद्योगीकरण से प्रताड़ित आदिवासी समाज
डॉ. भीमराव रामकिशन घोडगे ||129

35) अनुज लुगुन की कविता में आदिवासी विमर्श (लम्बी कविता - 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के विशेष ...
संतोष नागरे, जि. बीड ||132

36) हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श
प्रा. पोटकुले हिरा तुकाराम, बीड ||135

37) FLUVIAL ASSESSMENT OF THE BEDROCK INCISION IN THE DEVELOPMENT PO...
Mr. K. Pawar, Dr. A. Jethe, Dr. S. Gaikwad, Prof. M. Ayub & Dr. K. C. Mohite ||137

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03
Scanned with CamScanner

"यह देश बहुजन का है / यह देश बहुजन का होगा
दलित-पिछड़े, आदिवासी, स्त्री / सब शोषित जन,सब सर्वहारा
अस्तित्व और अस्मिता के साथ / ऑख तरेरेंगे आदमखोर को।"[१५]

स्त्री शक्ति तथा सत्ता की प्रतीक बिरसी के नेतृत्व में लड़े जानेवाले संघर्ष में शोषणकारी व्यवस्था की पराजय कवि को स्पष्ट दिखाई देती है । अतः उसे बहुजनों के समूह स्वर में उच्चरित विजय गीत सुनाई देते हैं।

सारांश :-

समकालीन हिंदी कविता के युवा कवि अनुज लुगुन ने अपनी लम्बी कविता 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के माध्यम से धर्मसत्ता, राजसत्ता, सामंती सत्ता, साम्राज्यवादी सत्ता, पूँजीवादी सत्ता तथा पितृसत्ता की शोषण चक्की में सदियों से पिसते आदिवासी समाज की व्यथा-कथा को बयान किया है। वैश्वीकरण से उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति की अतिरिक्त लालसा ने मनुष्य को बाघ बना दिया। इन अप्राकृत बाघों के अमानवीय हमले, उससे जन्मी विस्थापन की समस्या, नक्सलवाद आदि का यथार्थ अंकन करते हुए अनुज लुगुन स्त्री प्रधान आदिवासी संस्कृति की सहजीविता की ओर उन्मुख होते है। सहजीविता के रास्ते पर चलकर ही शोषण से मुक्ति संभव है। अतः अनुज लुगुन 'बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी' के माध्यम से सहजीविता पर आधारित सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण हेतु प्रयासरत है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.२४
२) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.१५
३) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.३८
४) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.११
५) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ. ४४
६) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.२३
७) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.२७
८) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.५२
९) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ .२७
१०) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, भू. पृ.२०
११) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.७६
१२) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.९७
१३) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ. ९९.१००
१४) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.१०२
१५) बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी, अनुज लुगुन, पृ.१०५

36

हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श

प्रा. पोटकुले हिरा तुकाराम
हिंदी विभाग,कला व विज्ञान विभाग,
शिवाजी नगर गढी, गेवराई, बीड

हिंदी साहित्यकारों ने अपनी कृतियों के माध्यम से आदिवासियों के सामाजिक जीवन के विविध पक्षों,रीति-रिवाजों,त्योहारों, लोकगीत,लोकनर्त्य,लोककथाएँ,उत्सव,विवाह के तरिके साथ ही उनकी समस्याओं और संघर्ष को सशक्त रुप से व्यक्त किया है हिंदी लेखकों ने आदिवासी पुरुष व नारी दोनों के जीवन संघर्ष,नारी जीवन की पीड़ा, उनकी विषमता असमर्थता,उदारता,की भावना और तत्कालीन विषम परिस्थितियों का जीवंत अंकन अपनी रचनाओं में किया है, आदिवासी समाज तमाम संघर्ष,विषम परिस्थितियाँ और चुनौतियों से घिरा हुआ है जिसके कारण उसके अस्तित्व और अस्मिता पर गहरा संकट निर्माण हुआ है, इन्ही स्थितियों को देखकर हिंदी साहित्यकारों ने आदिवासी जीवन को कें, में रखकर उनकी लोक संस्कृति, धर्म,दर्शन के साथ उनकी पीड़ा,संघर्ष को सफलतापूर्व व्यक्त किया है।

आदिवासी शब्द का शाब्दिक अर्थ है,प्रथम निवासी जो पहले से यहाँ रह रहे हो। आदिवासी को संविधान की पंचम् अनुसूची में 'जनजातियाँ' इस शब्द से परिभाषित किया है। पौराणिक कथाओं में भी उनके मानव समुदायों का उल्लेख है जो भारत में आर्यो के आगमन से पुर्व विद्यमान रहे हो, जिन्हें विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है जैसे असुर,दस्यु,निषाद किरात,राक्षस आदि।आदिवासी शब्द की उत्पत्ती हिंदी भाषा के दो शब्द आदि+वासी के मिलने से हूई है,जिसका अर्थ है मूल निवासी। आदिवासी मुख्यतः शहरों से दूर ग्रामीण परिवेश में रहते है। इन आदिवासीयों की समस्याओं,संघर्ष का सजीव चित्रण हिंदी साहित्यकारों ने किया है।

हिंदी साहित्य में आदिवासीयों का आजादी पूर्व और आजादी के बाद की परिस्थिती,समस्या संघर्ष को चित्रित किया है। आदिवासीयों के स्वतंत्रता के पहले की समस्या है वनोपज पर प्रतिबंध,तरह-तरह के लगान,महाजनी शोषण,पुलिस प्रशासन की जातियाँ आदि और स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा अपनाए गए विकास कार्यक्रम में

Scanned with CamScanner

आदिवासीयों से उनके जल,जंगल और जमिन छीनकर उन्हें बेदखल किया गया। इस संघर्ष में आदिवासीयों से सांस्कर्तिक पहचान छूट रही है। तो दूसरी उनके आस्तित्व रक्षा का प्रश्न निर्माण हुआ है। अगर वे अस्तित्व को बचाने की कोशिश करते है तो सांस्कर्तिक पहचान नष्ट हो जाती है। इस द्वंद्व में फँसा आदिवासी अनेक चुनौतियों का सामने संघर्ष कर रहा है इसका जीवंत चित्रण हिंदी साहित्य में दृष्टिगोचर होता है।

हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से आदिवासीयों के जीवन संघर्ष को व्यक्त किया है। साथ ही उसमें अपनी पुरातन संस्कृति का -हास होते देखकर आई विकृतियों को देखके समकालीन कवियों का मन तिलमिला उठता है। इस पीड़ा और आदिवासीयों के जीवन में आनेवाले संकट को समकालीन कवियों ने अपनी कविताओं में चित्रित किया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में विकास के नाम आदिवसीयों को पैतर्कि संपत्ति से बेदखल करने की कोशिश की जा रही है। आज आदिवासीयों को अपनी जमीन जंगल को छोड़कर पलायन करने पर मजबूर है। इस पलायन की मजबूरी के कारण आदिवासीयों की भाषा संस्कर्ति विलुप्त होने का भयानक संकट उनके सामने खड़ा है। इसका वास्तव चित्रण कवियों ने कविता के माध्यम से किया है।

हिंदी कहानियों में वाल्टर भेंगरा की कहानी-सग्रह ' देने का सुख और लौटती रेखाएँ,आठवें दशक में पीटर पाल एक्का के कहानी संग्रह 'खुला आसमान बंद दिशाएँ, 'परती जमीन` और 'सोन पहाडी`,जेम्स टोप्पो 'शंख नदी भरी गेल`,रमाणिका गुप्ता कर्ति 'बहू जुठाई`,मंजु ज्योत्सना का 'जग गयी जमीन`,पूनम तूषामंड का 'मेले में लड़की`,केदारनाथ मीणा कृत 'आदिवासी कहानियाँ ` में आदिवासीयों का सशक्त चित्रण दृष्टिगोचर होता है।

उपन्यास साहित्य में तिलस्मी,ऐययारी उपन्यासों के युग से लेकर आज तक इस यात्रा में हिंदी के आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासों का विशेष योगदान रहा है। आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यास की शुरुवात जगन्नाथ चतुवू दी के 'बंसल मालवी` सन १८९९ से देखने को मिलती है। इस उपन्यास में चतुवूदीजी ने आदिवासी जीवन की कसमसाती जीवनानुभूति,उनके संघर्ष की 'बंसल मालवी में जीवंत चित्रण किया है। आजादी के बाद देवेंद्र सत्यार्थी ही प्रथम उपन्यासकार है जिन्हांने 'रथ के पहिए`सन १९५२ में मध्यप्रदेश के आदिवासीयों के गौड जनजाति के जीवन का यथार्थ का प्रामाणिक और संवेदना के साथ चित्रण किया है। फणिश्वरनाथ रेणू ने 'मैला आँचल` सन १९५२ में आदिवासी जातियों की निहायत गरीब,अशिक्षित,अंधविश्वासी और शिक्षा से दूर आदिवासी लोगों के जीवन चित्रण किया है। राजेंद्र अवस्थी के 'जंगल के फूल`उपन्यास में मध्यप्रदेश के बस्तर जिले में वनों पर निर्भर गौड आदिवसीयों के जीवन का अंकन किया है। रांगेय राघव कर्ति 'कब तक पुकारु` और 'धरती मेरा घर` उपन्यासों में आदिवासी जीवन का चित्रण दृष्टिगोचर होता है। मणि मधुकर का ' पिंजरे में पत्रा`,राकेश वत्स के 'जंगल के आसपास`और संजीव कर्ति 'धार` उपन्यास में आदिवसी जो आर्थिक शोषण,नारी शोषण,पिछड़ापन, सांस्कृतिक संकट,असुरक्षा के भावना को संजीवजी ने वाणी देने का प्रयास किया है। वीरेंद्र जैन का 'पार`,मैत्रेयी पुष्पा कर्ति 'अल्मा-कबुतरी` उपन्यास आदिवसी विमर्श की दृष्टि से महत्वपूर्ण उपन्यास है

संजीव कृत 'धार में बिहार के बाँसगडा,मदनपूरा,छोटा नागपूर आदि परिवेश में रहने वालेआदिवसी संथालो के जीवन की पीड़ा,व्यथा का चित्रण किया है। मैना और शर्मा के माध्यम से आदिवसी गरीब, पिड़ित संथाल और पूँजीवादियों के संघर्ष को प्रकट किया है। 'धार` उपन्यास की मैना अनपढ़ गँवार आदिवासी नारी है जिसमें इन पूंजीवादी, फैक्टरीवालों से संघर्ष करने की चेतना,ललक विचारों की तेज धार है। इसी आत्मविश्वास के बल पर मैना संथालों के सत्व के लिए लड़ती है और धीरे-धीरे संथालों में लड़ने के चेतना भरती है। मैना का कथन है- "हमें धार की जरुरत है,सतत सानजो ताजा होती है धार। ." मैना आदिवसीयों के अस्तित्व की रक्षा करना चाहती है और जीवन भर पूँजीपतियों के खिलाफ संघर्ष करती है। वह जेल भी जाती है वँहापर उसकी इज्जत भी लूटी जाती है। इन राक्षसों के चंगुल से या नजर से कोई संथाल स्त्री नहीं छूट पायी। इससे स्पष्ट है कि कहीं पर भी स्त्री सुरक्षित नहीं है। मैना खुद के साथ हुए इन घटनाओं को नियती मानकर आगे बढती है। वह संथालों में चेतना जागृत करती है और उनकी कर्ति और भावनाओं को धार देती है,इसी में उसकी जीत है। संजीव ने 'धार` में संथाल परगना में कोयला खदानों में काम करने वाली श्रमजीवी,मजदूर आदिवसीयों की व्यथा,पीड़ा संघर्ष के सशक्त रुप से व्यक्त किया है। हिंदी उपन्यासकारों ने शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन के सत्य को सबके सामने रखा है साथ ही दूरदराज क्षेत्रों में गुम होते उन आदिवसीयों के जीवन का भी जीवंत चित्रण किया है। इसमे मैत्रेयी पुष्पा कृत 'अल्मा-कबुतरी` एक ऐसा उपन्यास है,जिसमें बुन्देल क्षेत्र में बसने वाली कबुतरी समाज के जीवन का कटू सत्य पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। अल्मा कबुतरी में सदियों से प्रताड़ित,उपेक्षित स्त्री अपनी अस्मिता,स्वतंत्र सोच,मुक्ति एवं स्वाभिमान के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। कबूतरी जाती के लोग सभ्य समाज का हिस्सा बनना चाहते है किन्तु यह समाज उन्हें जंगलो में रहने के लिए मजबूर करता है। इनके लाख कोशिशों के बावजूद भी सभ्य समाज का हिस्सा नही बन पाते क्योंकि इनके पास

Scanned with CamScanner

अपनी कोई जमीन नहीं है,न रहने के लिए स्थायी घर। आज भी सभ्य समाज आदिवासी जनजाति के स्त्री और पुरुषों को और हीन दृष्टि से देखते है। लंबी गुलामी के बाद देशवासियों को आजादी मिली पर आदिवासी आज भी उसी हालत में जी रहे है। अपनी इकलौती बेटी अल्मा को कर्ज चुकाने के लिए सूरजभान के यहा गिरवी रखना पड़ता है। राम सिंह अल्मा से कहता है- "अल्मा तू गिरवी धारी है समझे रहना। इसमें बुराई भी नहीं। कबूतराओं में यह चलन रहा है। जेवर-गहना-बासन और बेटी मुसीबत के समय काम आते है।"'. पिता ने गिरवी रखने के बाद अल्मा बार-बार सभ्य समाज द्वारा शोषित होती है। कबूतरा समाज का व्यक्ति पढ़ा-लिखा हो या अनपढ वह सभ्य समाज के सामने मजबूर लाचार है। किसी के भी गुनाह के लिए कबूतराओं को अपराधी मान लिया जाता है। रामसिंह इस सोच का शिकार है। रामसिंह को हर छोटे-बड़े हादसे के लिए जिम्मेदार ठहराकर पुलीस उसे सजा देते है। इससे स्पष्ट है कि आदिवासीयों पर किस प्रकार आत्याचार,शोषण किया जाता है। अल्मा कबूतरी कबूतरी जनजाति की स्त्री शोषण का चित्रण और उसके अपमान की जीती जागती तस्वीर है। आदिवासीयों के ऐसी दशा के जिम्मेदार सभ्य कहलाने वाले समाज के लोग,पुलिस नेता लोग है।

अत: स्पष्ट है कि हिंदी साहित्यकारों ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आदिवासी जीवन का सभ्य समाज द्वारा शोषित,घृणित एवं अपराधिक पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया है। साथ ही समाज व्यवस्था, घृणित सत्ता,राजनीति पर भी करारा व्यंग किया है। हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में आदिवासीयों का संघर्ष और चुनौतियों से घिरा जीवन,आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व पर आया गहरा संकट का सशक्त चित्रण के साथ उनकी लोक संस्कृति,सामाजिक- सांस्कृतिक जीवन,उत्सव,पर्व- त्यौहार,अंधविश्वास,रुढ़ि-परंपरा,आचार-विचार को भी हमारे सामने रखा है।

संदर्भ सूची:-

१.धार- संजीव, पृ.१६५

२.अल्मा कबूतरी- मैत्रेयी पुष्पा,पृ.२४४

३.http:// sarthaksamwad.blogspot.com/२०१८/०९/blog

४.http:// www.rachanakar.org/२०१७/०२/blog

❑❑❑

37

FLUVIAL ASSESSMENT OF THE BEDROCK INCISION IN THE DEVELOPMENT POTHOLES: A STRETCH OF KUKADI RIVER (CONFLUENCE OF RIVER DEV UPTO CONFLUENCE WITH GHOD RIVER)

Mr. Ketan PAWAR
Research Scholar,
C.T.Bora College, Shirur, Dist. Pune

Dr. Atul. JETHE
Assistant Professor,
C.T.Bora College Shirur, Dist. Pune

Dr. Sunil GAIKWAD
Associate Professor,
S.P. College Pune

Prof. M. AYUB
Associate Professor,
C.T.Bora College Shirur, Dist. Pune

Dr. K. C. MOHITE
Principal,
C.T.Bora College Shirur, Dist. Pune

1. INTRODUCTION

Potholes are a common feature in bedrock channels. Their formation can be associated with a significantproportion of the total erosion in many bedrock channels.[1]In many bedrock channels where potholes exist,they are the largest bed form type. Given that the size and shape of the largest bed forms exert a first-ordercontrol on water flow velocities via the drag they exert on the flow, the morphology of potholes likely exertsa primary control on turbulent flow structures, erosion rates and

Scanned with CamScanner